RNI -UPHIN/2008/29149 ISSN 0975-8321

वाङ्मय त्रैमासिक

जनवरी–जून 2016

सम्पादक :
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद
मोबाइल : 9044918670

इस अंक का मूल्य– 200/

सम्पादकीय सम्पर्क :
205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी, नियर पान वाली कोठी, दोदपुर रोड,
सिविल लाइन, अलीगढ़-202002 मोबाइल : 9044918670
E-mail :
vangmaya @gmail.com
Web : vangmay.com

फहरा रही है जर्जर चील पछ्या हवा में

संजय राय

"कविता इस लोक का पर-लोक है, जहाँ हमें जाना है।" - अरुण कमल

अरुण कमल समकालीन कविता के उल्लेखनीय कवियों में एक हैं। अब तक उनके पाँच संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं- 'अपनी केवल धार' (1980), 'सबूत' (1989), 'नए इलाके में' (1996), 'पुतली में संसार' (2004) और 'मैं वो शंख महाशंख' (2012)। कविता के अलावा आलोचनात्मक टिप्पणियों की दो किताबें 'कविता और समय' (1999) तथा 'गोलमेज' (2009) प्रकाशित हैं। साक्षात्कारों की एक किताब 'कथोपकथन' (2009) भी प्रकाशित है। 'अर्थात् औरों की कथा' नाम से एक आत्मकथ्य 'तद्भव' पत्रिका में शृंखलाबद्ध प्रकाशित हो चुका है। अरुण कमल को महज 44 साल की उम्र में अपने तीसरे कविता-संग्रह 'नए इलाके में' के लिए साल 1998 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यहाँ हमारा उद्देश्य अरुण कमल के इस कविता-संग्रह के बहाने उनकी काव्य-संवेदना की पड़ताल करना है।

अरुण कमल अपनी कविता में हमारे समय के बहाव का प्रतिपक्ष रचते हैं। वह मूलतः प्रतिपक्ष के कवि हैं। अपना एक पक्ष लेते हुए, अपना एक पक्ष रचते हुए उनकी कविता बनती है। स्पष्ट है कि उनकी कविता एक खास तरह के कश्मकश, एक खास तरह के द्वंद्व की सृष्टि करती है। एक समानांतर लोक रचने की बेचैनी लगातार जोर-जोर से धड़कती हुई महसूस की जा सकती है उनकी कविता में। उनकी पूरी काव्य-यात्रा एक पर-लोक रचने की बेचैन कोशिश है। ध्यान रहे 'परलोक' नहीं, बल्कि 'पर-लोक'। यहीं इसी संसार में एक नया संसार। कवि की इच्छाओं का संसार। एक स्वतंत्र और समानता के व्यवहार वाला शोषण मुक्त संसार।

स्पष्ट है कि अरुण कमल की कविता एक नए संसार की तलाश की छटपटाहट की कविता है। समय की भयावहता में डूबते-उतराते मनुष्य की उम्मीद के पतले धागे को बचाने की कविता है। पूँजीवाद और उससे उपजी विकराल परिस्थितियों के प्रत्याख्यान की कविता है। अगर हम ध्यान से देखें तो पाएँगे कि 'नए इलाके में' संग्रह में अरुण